Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

Original Article

जनपद जौनपुर के औद्योगिक विकास प्रतिरूप का भौगोलिक विश्लेषण

वीनस प्रकाश[1], प्रो. ओम प्रकाश सिंह[2]

[1]शोध छात्र,पूर्व विभागाध्यक्ष भूगोल.के.एन.आई.पी.एस.एस.सुलतानपुर।
[2]पूर्व विभागाध्यक्ष भूगोल.के.एन.आई.पी.एस.एस.सुलतानपुर।
Email- opsingh01961@gmail.com

Manuscript ID:
JRD -2025-170901
ISSN: 2230-9578
Volume 17
Issue 9(A)
Pp. 1-3
September 2025
Submitted: 22 Aug. 2025
Revised: 2 Sept. 2025
Accepted: 21 Sept.2025
Published: 30 Sept. 2025

प्रस्तावना

औद्योगिक विकास ही किसी देश के आर्थिक विकास का मापदण्ड माना जाता हैं। भारत के काफी औद्योगिक समूहों में सम्बृद्धि की दर अधिक रही है।[1] उद्योग शब्द से तात्पर्य वस्तु निर्माण के क्रियाकलाप से है इसमें किसी भी क्रमबद्ध नियोजित कार्य की श्रृंखला को शामिल करते हैं।

वृहद स्तर के उद्योग किसी भी राष्ट्र के सम्यक नियोजित आर्थिक विकास के लिए आवश्यक होते है क्योंकि वृहद स्तरीय इकाइयों में किसी भी प्रदेश विशेष के प्राकृतिक व मानवीय संसाधनों का सर्वोत्तम प्रयोग होता है। औद्योगिक उत्पादन में निर्मित वस्तुओं के अन्तर्गत कुछ ऐसी वस्तुओं को उपयोग मानव उत्पादन के ही रूप में उपयोग प्रारम्भ करता है ऐसी वस्तुओं को उपयोग की वस्तुएं कहा जाता है। जैसे मोटरकार, रेडीमेड वस्त्र, जूते इत्यादि। कोई भी वस्तु औद्योगिक इकाई में तब उपयोग की श्रेणी में आती है जब वह क्रमबद्ध प्रक्रियाओं से होकर गुजरती है। जैसे स्टील की थाली बनाने के लिए कच्चे लोहे का खनन, लौह अयस्क का औद्योगिक इकाई में शोधन, उससे इस्पात की प्राप्ति एवं प्राप्त इस्पात का दूसरी औद्योगिक इकाई में कच्ची सामग्री के रूप में प्रयोग किया जाता है। इसी औद्यौगिक श्रृंखला के निर्माण में किसी देश के समग्र संसाधनो का पूर्ण विकास व उपयोग होता है।

लघु स्तरीय उद्योगों के अन्तर्गत क्षेत्र में सरकारी क्षेत्र की नवीन औद्योगिक इकाइयों को शामिल किया जाता है इसमें निजी संस्थाएं भी समाहित होती है इसमें 50 से 150 व्यक्ति कार्यरत होते है।

कुटीर उद्योगों के अन्तर्गत उन औद्योगिक इकाइयों को सम्मिलित किया जाता है जिसमें 50 या उससे कम व्यक्ति कार्यरत होते है। जनपद जौनपुर उत्तर प्रदेश के पूर्वांचल का कृषि प्रधान जिला है परन्तु जनसंख्या का घनत्व सर्वाधिक एवं शिक्षा का स्तर ऊंचा है। यहाँ प्रति व्यक्ति जोत कम है इसलिए यहां के लोग रोजगार हेतु मुम्बई, कलकत्ता तथा दिल्ली पलायन कर जाते है। यदि उन्हे जिले में रोजकार उपलब्ध कराने हेतु यहां के कृषि कच्चे माल पर आधारित उद्योगों की स्थापना की जाए तो पलायन रूक सकता है। यहां कुछ बड़े, छोटे उद्योगों का विकास हो पाया है जिसमें कुछ लोगों को रोजगार उपलब्ध हुआ है।

मध्यम व वृहद स्तरीय उद्योग –

वृहत स्तरीय उद्योगों का भारतीय अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण स्थान है इन्हे भारतीय अर्थव्यवस्था को रीढ़ समझा जाता है। जिले में स्थापित जिला उद्योग केन्द्र से प्रकाशित औद्योगिक निर्देशिका के आधार पर मध्यम व वृहद स्तरीय उद्योगों को प्रदर्शित किया गया है दो वृहद स्तरीय औद्योगिक इकाइया स्थापित हुई थी जिनमें उत्तर प्रदेश राज्य चीनीनिगम शाहगंज एवं उत्तर प्रदेश स्टेट स्पिनिंग मिल्स जगदीशपुर सम्मिलित है जो वर्षों से बन्द पड़ी है इसके अलावा मध्यम स्तरीय उद्योगों में मेसर्स राजा प्यारे मिल प्रा.लि. वीरीवारी जौनपुर जिनमें 0.91 करोड़ पूंजी निवेशित है तथा 57 श्रमिक कार्यरत है, मेसर्स चन्दवक फ्लोर मिल प्रा. लि. वीरीवारी जौनपुर में 1.07 करोड़ पूंजी के रूप में निवेशित है तथा 48 श्रमिक कार्यरत है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
वीनस प्रकाश, शोध छात्र,पूर्व विभागाध्यक्ष भूगोल.के . एन . आई. पी. एस. एस. ,सुलतानपुर।

How to cite this article:
प्रकाश, . वीनस ., & सिंह, . ओम . प्रकाश . (2025). जनपद जौनपुर के औद्योगिक विकास प्रतिरूप का भौगोलिक विश्लेषण. Journal of Research and Development, 17(9(A)), 1–3. https://doi.org/10.5281/zenodo.17491761

Quick Response Code:
Website: https://jrdrvb.org/
DOI: 10.5281/zenodo.17491761
OPEN ACCESS

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

इसी प्रकार मेसर्स अब्सनत एण्ड सन्स प्रा०लि० भरीवपुर जौनपुर में 1.32 करोड़ रूपये निवेशित व 27 कर्मचारी कार्यरत, मेसर्स तिरूपति ट्यूब्स प्रा.लि. वीरीवारी चन्दवक जौनपुर में 2.70 करोड़ रूपये निवेशित व 35 कर्मचारी, रेजिटेन्स एलाय इंडिया लि. रेहटी जौनपुर में 2.06 करोड़ रूपये निवेशित व कर्मचारी 46 मेसर्स वी.सी.ए. इंजियनियरिंग सतहरिया में 1.56 करोड़ रूपये निवेशित व 94 कर्मचारी मेसर्स अपट्रान इंडिया लि० पराऊगंज में 0.17 करोड़ रूपये निवेशित व 48 कर्मचारी, मेसर्स अतुल प्लास्कि फैब्रिक्स प्रा.लि. त्रिलोचन जौनपुर में 1.05 करोड़ निवेशित व 26 कर्मचारी तथा मेसर्स त्रिलोचन एण्ड एलायन प्रा०लि० प्रधानपुर जौनपुर में 1.16 करोड़ रूपये निवेशित व 32 कर्मचारी कार्यरत है। जौनपुर वाराणसी राष्ट्रीय राजमार्ग पर त्रिलोचन बाजार से आगे कोयले पर आधारित 10 लघु व मध्यम प्रकार के उद्योगों की स्थापना हुई थी, जो चार पांच वर्षो बाद बन्द हो गयी। वाराणसी जिले का यू.पी. आई.एस.डी.सी. जौनपुर सीमा पर स्थित है जिससे कुछ सीमा वर्ती क्षेत्र के लोगों को रोजगार मिल रहा है।

लघु उद्योग–

देश की औद्योगिक नीति में जब जब परिवर्तन हुआ है तब तब लघु उद्योगों की प्रक्रिया में परिवर्तन किया गया है। वर्तमान औद्योगिक नीति के अनुसार ऐसे उपक्रम जिसमें मशीनो की कीमत 60 लाख रूपया या इससे कम हो लघु उद्योगों की श्रेणी में आते हैं इसमें मशीनो के प्रयोग के कारण ये कुटीर उद्योगों से अलग होते हैं। लघु उद्योगों में मशीने ऊर्जा द्वारा संचालित होती है, कच्चा माल स्थानीय स्तर पर न उपलब्ध होने पर बाहर से मंगाया जाता है तथा उत्पादित माल को व्यापारियों के माध्यम से बाजार में भेजा जाता है इसमें लोगों को अनवरत रोजगार दिया जाता है।

सारिणी–1

जनपद जौनपुर में मध्यम व वृहदस्तरीय उद्योग (2021–22)

क्र.सं०	इकाई	यूनिट संख्या	पूंजीनिवेश (लाख)	उत्पादन	कार्यरत श्रमिक
1.	मे. राजा प्यारे मिल प्रा.लि.सतहरिया जौनपुर	1	0.91	–	57
2.	मे. यू.पी. स्टेटशूगर मिल कार्पो. शाहगंज जौनपुर	1	बन्द है	बन्द है	बन्द है
3.	मे. चन्दवक फ्लोर मिल प्रा.लि. वीरीवारी जौनपुर	1	1.07	–	48
4.	मे. अब्सनत एण्ड सन्स प्रा.लि. भरीवपुर जौनपुर	1	1.32	138	27
5.	मे. तिरूपति ट्यूब्स प्रा. लि. वीरीवारी चन्दवक जौनपुर	1	2.70	–	35
6.	मे. ड. प्र. स्टेट स्पिनिंग मिल जौनपुर	1	11.38	–	बन्द है
7.	रेजिस्टेन्स एलाय इंडिया लि. रेहटी जौनपुर	1	2.06	0.002	46
8.	मे. पी.सी.ए. इंजि. सतहरिया जौनपुर	1	1.56	–	94
9.	मे. अपट्रान इंडिया लि. पराऊगंज जौनपुर	1	0.07	0.16	48
10.	मे. अतुल प्लास्टिक फैब्रि. प्र. लि. त्रिलोचन जौनपुर	1	1.05	0.09	26
11.	मे. त्रिलोचन एलोयन प्रा.लि.प्रधानपुर जौनपुर	1	1.16	1.50	32
योग		11	24.793	2.276	413

स्रोत– औद्योगिक निर्देशिका, जौनपुर 2022

सभी लघु उद्योगों में समन्वय हेतु भारत सरकार ने बोर्डों की स्थापना की है, इनमें अखिल भारतीय हैण्डलूम बोर्ड (अक्टूबर 1952) दी क्वायर बोर्ड (जुलाई 1953), अखिल भारतीय खादी व ग्रामोद्योग बोर्ड (फरवरी 1953) और लघु पैमाने में उद्योग निगम (नवम्बर 1954) आदि प्रमुख है।[2] लघु स्तरीय उद्योगों को 12 श्रेणियों में रखा गया है जिनके अन्तर्गत खाद्य व्यापार, सूती, ऊनी, रेशमी वस्त्र उत्पादन, बुनाई व अन्य उद्योग, काष्ठ उद्योग, कागज, लोहा, चमड़ा उद्योग, रवड़ प्लास्टिक उद्योग रसायन उद्योग, अधात्विक खनिज व सम्बद्ध मशीनरी, इलेक्ट्रानिक रिपेयर पार्ट्स उद्योग, यातायात एवं सम्बद्ध उद्योग, विभिन्न प्रौद्योगिक सेवाएं एवं अन्य उद्योग सम्मिलित किये गये है। जिसमें वर्तमान में इन उद्योगों से सम्बन्धित कुल 2530 इकाइयाँ है। यू.पी.आई.एस.डी.सी. जौनपुर में प्रयागराज रोड़ पर स्थित सतहरिया में है जहाँ कई लघु उद्योग स्थापित है उसमें दैनिक मजदूरी श्रमिकों को रोजगार उपलब्ध होता है।

अतः आवश्यकता है कि जिले में अधिक लघु उद्योगों की स्थापना की जाय इसके लिए स्थानीय स्तर के कच्चे माल का प्रयोग किया जाय, बन्द एवं बेकार पड़े उद्योगों को पुनर्जीवित किया जाय, जिससे कृषि पर भार कम हो तथा अधिक से अधिक लोगों को रोजगार मिल सके।

कृटीर उद्योग–

कुटीर उद्योग वे है जो पूर्ण रूपेण या मुख्य रूप से परिवार के सदस्यों की सहायता से पूर्ण कालिक या अंशकालिक व्यवसाय के रूप में चलाये जाते है इसमें परम्परागत विधियों एवं स्थानीय कच्चा माल का प्रयोग एवं उत्पादित सामानों को स्थानीय बाजारें में बेचा जाता है।[3] अतः कुटीर उद्योग ऐतिहासिक दृष्टिकोण से आधुनिक निर्माण उद्योग का आधार है इनमें अपने पैतृक दक्षता व कुशलता से परिवार के सदस्यों की सहायता से वस्तुएं बनायी जाती हैं तथा उत्पादित वस्तुएं पारिवारिक

Journal of Research and Development
Peer Reviewed International, Open Access Journal.
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-17, Issue-9(A)| September 2025

आवश्यकता की पूर्ति करती है तथा अधिक उत्पाद को स्थानीय बाजार में बेचा जाता है। इस प्रकार कुम्हार, बढ़ई, लोहार, नाव बनाने वाले आदि अपनी आय इन उद्योगों से प्राप्त करते है।[4] कुटीर उद्योगों दो भागों में बांटा गया है –

1. ग्रामीण कुटीर उद्योग
2. शहरी कुटीर उद्योग

1) ग्रामीण कुटीर उद्योग :–

ए ग्रामीण क्षेत्रों में स्थापित स्थानीय कच्चे माल पर आधारित होते है इनका उत्पादन लघुस्तर पर होता है। ग्रामीण कुटीर उद्योगों को दो वर्गों में विभाजित किया गया है अ– वे उद्योग जो कृषकों द्वारा सहायक धंधे के रूप में चलाये जाते है जैसे मुर्गी पालन, टोकरियाँ बनाना, गाय–भैंस पालना, करघो पर बुनाई, रेशम के कीड़े पालना, रस्सी बनाना मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन, आदि ब– वे उद्योग जो ग्रामीण कौशल से सम्बन्धित होते है जैसे मिट्टी के वर्तन बनाना, चमड़े के जूते बनाना, सरसों से तेल निकालना, कपड़े की सिलाई व लोहे से सामान बनाना आदि।

2) शहरी कुटीर उद्योग –

वे उद्योग जो शहरी क्षेत्र में स्थापित होते हैं, इनके अन्तर्गत, खिलौने बनाना कपड़ो पर कढ़ाई करना, लकड़ी के फर्नीचर बनाना, साबुन व हथकरघा पर कपड़े बनाना आदि आते है।

सारांश–

इस विश्लेषण से स्पष्ट है कि जिला कृषि प्रधान होने, पूंजी की कमी, विकसित तकनीकी का आभाव तथा, पिछड़े नगरीकरण के कारण यहाँ वृहद व मध्यम स्तरीय उद्योगो की स्थापना सम्भव नही है बल्कि बढ़ती जनसंख्या, बेरोजगारी श्रमाधिक्य के कारण यहाँ कृषि, पशु व लघु संसाधनो पर आधारित लघु व कुटीर उद्योगों की अधिक सम्भावना है जिससे कृषि पर जनसंख्या का दबाव कम किया जा सकता है इस कार्य में सरकारी नीति एवं लोगों की जागरूकता महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है। परम्परागत शिक्षा से हट कर रोजगारपरक शिक्षा को बढ़ावा दिया जाये, बैंकिग से पयाप्त ऋण उपलब्ध कराया जाए तथा उत्पादित वस्तु के लिए अच्छे बाजार की व्यवस्था की जाए। परिवहन साधनों का पर्याप्त विकास किया जाए तो जनपद औद्योगिक विकास में मानक स्थापित कर सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. आर . नागराज (1989) 1980 तक विनिर्माण उद्योग में वृद्धि, प्राथमिक उपलब्धियां आर्थिक व राजनैतिक साप्ताहिकजुलाई 1989 सारिणी 55 पेज 1482–83
2. आरण्एसण मिश्रा (1989) इलाहाबाद जिले में ग्रामीण विकास एवं सामाजिक परिवर्तन अप्रकाशित डीणफिलण थेसिस इलाहाबाद विश्व विद्यालय इलाहाबाद पेज 174–196
3. वीण्सीण सिन्हा एवं वीणसिन्हा (2002) भारतीय अर्थ व्यवस्था साहित्य भवन पब्लिशर्स एण्ड डिस्ट्रीव्यूटर्स प्राणलिण लाजपत कुंज आगरा पेज 224 देखे संदर्भ सं.–02